रूहों हक छाती चुभ रही, सो देवे लज्जत अरवाहों को।
असल सुख सागर भयो, देखें अर्स आराम सबमों।। ८३ ।।

रूहों को श्री राजजी महाराज की छाती (दिल) याद आती है तो रूहों को आनन्द आता है। तब रूह के दिल में सुख ही सुख का अनुभव होता है। तो वह सभी रूहों को अर्श के आराम में देखती हैं।

ए जो हक हैड़े की खूबियां, सो क्या केहेसी बुध माफक।
पर ए कहे हक हुकम, और हक इलम बेसक।। ८४ ।।

श्री राजजी महाराज के दिल की खूबियों को यहां की बुद्धि कैसे कहेगी? पर यह जो कुछ कहा है श्री राजजी के हुकम और तारतम वाणी से कहा है।

रूह खड़ी करे हुकम, और बेसक लदुन्नी इलम।
ना तो रूह कहे क्यों नींद में, हक हैड़ा बका खसम।। ८५ ।।

श्री राजजी महाराज का हुकम और जागृत बुद्धि की तारतम वाणी रूह को खड़ा करती है। वरना रूह सपने में रहकर श्री राजजी के अखण्ड दिल की बातों को कैसे बयान कर सकती है?

महामत कहे बोलूं हुकमें, अर्स मसाला ले।
दरगाही रूहन को, सुख असल देने के।। ८६ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि अब मैं जो कुछ कह रही हूं श्री राजजी महाराज के हुकम से परमधाम का मसाला लेकर बोलती हूं, ताकि परमधाम की रूहों को अखण्ड सुख दे सकूं।

।। प्रकरण ।। ११ ।। चौपाई ।। ६४१ ।।

खभे कण्ठ मुखारविंद सोभा समूह

मंगला चरन

मुख मेरे मेहेबूब का, रंग अति उज्जल गुलाल।
क्यों कहूं सलूकी नाजुकी, नूर तजल्ली नूरजमाल।। १ ।।

मेरे महबूब श्री राजजी महाराज का मुखारबिन्द उज्ज्वल और लालिमा लिए है। इनके स्वरूप के तेज, पुंज, कोमलता एवं शोभा कैसे वर्णन करूं?

बांहें मेरे मासूक की, प्यारी लगें मेरी रूह।
हक हुकम यों कहावत, सो वाही जाने हकहू।। २ ।।

मेरे माशूक श्री राजजी महाराज की बांहें मेरी रूह को बहुत प्यारी लगती हैं। यह श्री राजजी महाराज का हुकम कहलवा रहा है। हुकम ही इनकी हकीकत को जानता है।

अंग रंग सलूकी सुभानकी, चकलाई उज्जल गौर।
नाम सुनत इन अंग के, जीवरा न होत चूर चूर।। ३ ।।

श्री राजजी महाराज के अंग के रंग की सलूकी (शोभा), चकलाई (सुन्दरता) उज्ज्वल और गौर (गोरी) है। इन अंगों के नाम सुनकर यह जीव टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं हो जाता?

ए छबि अंग अर्स के, जोत अंग हक मूरत।
ए केहेनी में आवे क्यों कर, जो कही अमरद सूरत।। ४ ।।

परमधाम में श्री राजजी महाराज के स्वरूप की छवि जो अमरद कही है, उसके अंग के तेज का वर्णन कैसे किया जाए?

Nijanand App

खभे देत दोऊ खूबियां, रूह देख देख होए खुसाल।
जो नेक आवे अर्स की लज्जत, तो रोम रोम लगे रूह भाल।।५।।

श्री राजजी महाराज के दोनों बाजू अति सुन्दर हैं, जिन्हें देखकर रूह खुश होती है। यदि जरा भी परमधाम की लज्जत मिल जाए तो रूह के रोम-रोम में भाले के समान चुभते हैं।

खभे मच्छे कोनिया, और कलाइयां काड़न।
पोहोंचे हथेली अंगुरी, नूर क्यों कर कहूं नखन।।६।।

बाजुओं के कन्धे, मच्छे (डौले), कोहनियां, कलाइयां, कड़े, पोहोंचे, हथेलियां, उंगलियां तथा उंगलियों के नख के नूर का वर्णन कैसे करूं?

जोत नखन की क्यों कहूं, अवकास रह्यो भराए।
तामें जोत नखन की, नेहेरें चलियां जाए।।७।।

नखों की जोत का कैसे वर्णन करें, जिससे आकाश तेज से भरा है। उसमें नखों का तेज नहरों के समान चलता दिखाई देता है।

ज्यों ज्यों हाथ की अंगुरी, होत है चलवन।
त्यों त्यों नख जोत आकास में, नेहेरें चीर चली रोसन।।८।।

जैसे-जैसे श्री राजजी महाराज हाथ की उंगलियां चलाते हैं, वैसे-वैसे आकाश में नखों की जोत दूसरे तेज के अन्दर चलती दिखाई देती है।

एक अंग जो निरखिए, तो निकस जाए उमर।
एक अंग बरनन ना होवहीं, तो होए सरूप बरनन क्यों कर।।९।।

श्री राजजी महाराज के एक अंग को देखें तो यहां की सारी उम्र निकल जाए पर एक अंग का वर्णन करना भी सम्भव नहीं होगा, तो पूरे स्वरूप का वर्णन कैसे करें?

अति गौर हस्त कमल, अति नरम अति सलूक।
ए हस्त चकलाई देखके, जीवरा होत नहीं टूक टूक।।१०।।

श्री राजजी महाराज के हस्त कमल गोरे, नरम और अति सुन्दर हैं। इन हाथों की शोभा को देखकर जीव टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं हो जाता?

काड़े कलाई कोनियां, इन अंग रंग सलूक।
फेर मच्छे खभे लग देखिए, रूह क्यों न होए भूक भूक।।११।।

हस्त कमल के कड़े, कलाई और कोहनी के रंग की सलूकी, ऊपर भुजा और कंधे को देखकर रूह के टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं हो जाते?

ए अंग सारे रस भरे, सब संधों संध इस्क।
सहूर किए जीवरा उड़े, अर्स अंग वाहेदत हक।।१२।।

श्री राजजी महाराज के सभी अंग मस्ती से भरपूर हैं और नस-नस में इश्क भरा है। जिसका जागृत बुद्धि का ज्ञान लेकर विचार करने से यह जीव समाप्त हो जाए और परआतम जग जाए।

Nijanand App

जीवरा न समझे अर्स को, ना सहूर करे वाहेदत।
रूहें भूल गई लाड़ लज्जत, ना सुध रही निसबत।। १३ ।।

मेरे जीव को परमधाम और परआतम की सुध नहीं है। रूहें खेल में आकर धनी के लाड़ लज्जत को भूल गई हैं। उन्हें श्री राजजी की अंगना होने की भी सुध नहीं रह गई है।

।। मंगला चरन तमाम ।।

अब कहूं कण्ठ सोभा मुखकी, और इस्क सबों अंग।
आसिक दिल छबि चुभ रही, मासूक रूप रस रंग।। १४ ।।

अब श्री राजजी महाराज के कंठ, मुख और सब अंगों के इश्क की शोभा का वर्णन करती हूं। आशिक रूहों के दिल में माशूक श्री राजजी महाराज के स्वरूप की छवि के रंग रस की सलूकी चुभ गई है।

ए जो कोमलता कण्ठ की, क्यों कहूं चकलाई गौर।
नेक कह्या जात ख्वाब में, जो हकें दिया सहूर।। १५ ।।

गले की नरमाई, चिकनाहट, गोरा रंग और सुन्दरता कैसे कहूं? इस सपने के संसार में श्री राजजी महाराज की तारतम वाणी से ही वर्णन किया है।

गौर केहेतीहों मुखसे, सो देख के अंग इतका।
ए जुबां दृष्ट इत फनाकी, सोभा क्यों कहे कण्ठ बका।। १६ ।।

मैं मुख से गौर रंग कहती हूं तो यहां का गोरा रंग देखकर। मेरी जबान और नजर झूठे संसार की है, इसलिए अखण्ड कण्ठ की शोभा का वर्णन कैसे करे?

कण्ठ गौर कई सुख देवहीं, जो कछू खोले रूह नजर।
सो होत हक के हुकमें, जिनने करी नजीक फजर।। १७ ।।

यदि रूह की नजर खोलकर देखें तो श्री राजजी महाराज का कण्ठ गोरा और कई तरह के सुख देने वाला है। यह श्री राजजी महाराज के हुकम से ही कहती हूं, जिन्होंने फजर का ज्ञान दिया है।

ए जो लज्जत लाड़ की, सोभी हुई हाथ इजन।
जिन निसबतें बेसक करी, ताए क्यों न आवे लज्जत तन।। १८ ।।

श्री राजजी के लाड़ और लज्जत हुकम के हाथ में हैं। जिस निसबत के कारण श्री राजजी महाराज ने जागृत बुद्धि का ज्ञान देकर निस्संदेह कर दिया है तो उस निसबत वाली अंगना को धनी की लज्जत इस तन में क्यों नहीं आती?

ना तो बेसक जब निसबत, तब रूह क्यों करे फरामोस।
ए देह जो सुपन की, खिन में उड़ावे हक जोस।। १९ ।।

जब रूह को अंगना होने का संशय नहीं रहा तो उसे फरामोशी क्यों रहे? तो फिर श्री राजजी के जोश से इस सपने के तन को उड़ा देना चाहिए।

Nijanand App

ए जो देखो सहूर करके, भई आड़ी हक आमर।
ना तो बल करते धनी बेसक, ए देह ख्वाब रहे क्यों कर।। २० ।।

यदि जागृत बुद्धि से विचार करके देखें तो श्री राजजी का हुकम ही आड़े आता है। वरना धनी का बल आते ही संसार का तन उड़ जाना चाहिए।

प्रीत रीत इस्क की, इस्कै सहज सनेह।
निस दिन बरसत इस्क, नख सिख भीगे सब देह।। २१ ।।

तब रात-दिन रूह अपने धनी के प्रेम, इश्क, प्रीति, स्नेह में नख से शिख तक इश्क की वर्षा में भीगी रहेगी।

भौं भृकुटी पल पापण, मुसकत लवने निलवट।
इन विध जब मुख निरखिए, तब खुलें हिरदे के पट।। २२ ।।

श्री राजजी महाराज की भौंहें, भृकुटि, पलकें, गाल, माथा सब मुस्कराते हुए दिखते हैं। जब इस प्रकार श्री राजजी कें मुखारबिन्द को देखें तो हृदय के पट खुल जाएंगे।

छब फब नई एक भांत की, श्रवन गाल मुसकत।
लाल अधुर मुख नासिका, जानों गौर हरवटी हंसत।। २३ ।।

श्री राजजी महाराज की यह छवि नए तरीके की है, जिसमें कान, गाल, लाल होंठ, मुख, नासिका तथा गोरे रंग की हरवटी सभी हंसते दिखाई देते हैं।

हाथ पांउं पेट हैयड़ा, कण्ठ हार भूखन वस्तर।
ए सब अंग हक के मुसकत, और नाचत हैं मिलकर।। २४ ।।

हाथ, पांव, पेट, हृदय, कण्ठ, हार, आभूषण, वस्त्र सभी अंग मिलकर मुस्कराते हैं और मिलकर नाचते दिखते हैं।

बल बल जांउं मुख हकके, सोभा अति सुन्दर।
ए छबि हिरदे तो आवहीं, जो रूह हुकमें जागे अंदर।। २५ ।।

श्री राजजी महाराज के ऐसे मुखारबिन्द पर बलिहारी जाती हूं जो अत्यन्त सुन्दर है, परन्तु यह श्री राजजी महाराज की छवि हृदय में तब आए, जब हुकम से रूह अन्दर जाग गई हो।

हक मुख छब हिरदे मिने, जो आवे अंतस्करन।
तिन भेली लज्जत लाड़ की, आवे अर्स के अंग वतन।। २६ ।।

श्री राजजी महाराज के मुख की छवि जब हृदय में आ जाती है तो उसके साथ ही अखण्ड परमधाम के तनों में श्री राजजी महाराज की लाड़ लज्जत मिलने लगती है।

गौर मुख लाल अधुर, ए जो सलूकी सोभित।
एह जुबां तो केहे सके, जो कोई होए निमूना इत।। २७ ।।

श्री राजजी महाराज के गौर (गोरे) मुखारबिन्द के लाल होंठों की सलूकी की शोभा यहां की जबान तब वर्णन करे जब यहां कोई दूसरा नमूना हो।

Nijanand App

कहे जांए न गौर गलस्थल, और अधुर लालक।
मुख चकलाई हक की, सब रस भरे नूर इस्क।। २८ ।।

यहां की जबान से गोरे गाल, होंठों की लालिमा, मुखारबिन्द की सुन्दरता, सभी अंग इश्क के रस और नूर के भरे हैं, इनका वर्णन कैसे करें?

लाल जुबां दंत अधुर, हरवटी गौर हंसत।
जब बातून नजरों देखिए, तब रूह सुख पावत।। २९ ।।

लाल जबान, दांत, होंठ, हरवटी हंसती दिखाई देती है। इस शोभा को जब बातूनी नजर से देखो तो रूह को सुख मिलता है।

अधुर हरवटी बीच में, क्यों कहूं लांक सलूक।
एही अचरज मोहे होत है, दिल देख न होत भूक भूक।। ३० ।।

होंठ और हरवटी के बीच गहराई की सलूकी कैसे बताऊं? यही बड़ी हैरानी है कि इन सबको देखकर दिल के टुकड़े क्यों नहीं हो जाते?

दोऊ छेद्र चकलाई नासिका, गौर रंग उज्जल।
तिलक निलाट कई रंगों, नए नए देखत माहें पल।। ३१ ।।

नासिका की सुन्दरता तथा दोनों छेद उज्ज्वल और गोरे रंग के हैं। माथे पर तिलक पल-पल में कई रंगों में बदलता दिखाई देता है।

नैन रस भरे रंगीले, चंचल चपल भरे सरम।
ए अरवाहें जानें अर्स की, जो मेहेरम बका हरम।। ३२ ।।

श्री राजजी महाराज के नैन इश्क के रस से भरे हैं। चंचल, चपल तथा लाज से भरे हैं। यह परमधाम की रूहें जानती हैं जो अर्श की बेगमें हैं।

नेत्र अनियां अति तीखियां, रस इस्क भरे पूरन।
ए खैंचें जिन रूह ऊपर, ताए सालत हैं निस दिन।। ३३ ।।

श्री राजजी महाराज के नैनों की तिरछी चितवन इश्क से भरी है। जिसकी तरफ नजर भरकर देख लेते हैं, वह रात-दिन तड़पती रहती है।

स्याम सेत भौंह लवने, नेत्र गौर गिरदवाए।
स्याह पुतली बीच सुपेतमें, जंग जोर करत सदाए।। ३४ ।।

नैनों की सफेदी और काली पुतलियों के ऊपर भौंहें काली हैं। नैनों के चारों तरफ गोरा रंग है। आंखों की सफेदी के बीच काली पुतली की तरंगें आपस में टकराती हैं।

सोभा धरत अति श्रवनों, मोती उज्जल बीच लाल।
ए मुख रूह जब देखहीं, बल बल जाऊं तिन हाल।। ३५ ।।

कान बड़ी सुन्दर शोभा वाले हैं, जिनमें उज्ज्वल मोती और लाल लटकते हैं। ऐसे मुखारबिन्द को जब रूह देखती है तो उस पर वारी-वारी जाती है।

Nijanand App

प्यारी बातें करे जब आसिक, हेतें सुनत हक कान।
क्यों कहूं सुख तिन रूहके, जो प्यार कर सुनें सुभान।। ३६ ।।

आशिक रूहें जब प्यारी-प्यारी बातें करती हैं तो श्री राजजी बड़े प्यार से सुनते हैं। उन रूहों के सुख का कैसे वर्णन करें, जिनकी प्यार भरी बातें श्री राजजी सुनते हैं।

रूह बात करे एक हक सों, हक देत पड़उत्तर चार।
कुरबान जाऊं हक हादीकी, जासों हक करें यों प्यार।। ३७ ।।

श्री राजजी से रूह एक बात करती है, श्री राजजी उसके चार उत्तर देते हैं। ऐसे श्री राज श्यामाजी की रूहों पर कुर्बान जाती हूं, जिनसे श्री राजजी महाराज इतना प्यार करते हैं।

ए छबि अंग अर्स के, जो अंग हक मूरत।
ए केहेनी में आवे क्यों कर, जो कही अमरद सूरत।। ३८ ।।

यह श्री राजजी महाराज के स्वरूप की छवि है। जिनके स्वरूप को रसूल साहब ने अमरद कहा है। इसकी शोभा कैसे कही जाए?

कांध केस पेच पगरी, पीठ लीक रूप रंग।
हाए हाए जीवरा ना उडे, केहेते अर्स रेहेमानी अंग।। ३९ ।।

कंधे पर घुंघराले बाल, पगड़ी के पेंच, पीठ की गहराई, रूप और रंग कहते हुए हाय! हाय! यह जीव क्यों नहीं उड़ जाता?

पाग सोभित सिर हक के, बनी हक दिल चाहेल।
सो इन जुबां क्यों केहे सके, जाकी दृष्ट अंग इन खेल।। ४० ।।

श्री राजजी महाराज के सिर पर उनके दिल चाहे अनुसार पाग की शोभा है तो इस संसार की झूठी नजर से और जबान से कैसे वर्णन करें?

दुगदुगी सोभा तो कहूं, जो पगड़ी सोभा होए और।
जोत करे हक दिल चाही, कोई तरफ बनी इन ठौर।। ४१ ।।

दुगदुगी की शोभा का वर्णन तो तब करूं जब पगड़ी से अलग हो। यह दुगदुगी श्री राजजी के चाहे अनुसार ही पगड़ी में शोभा देती है। ऐसी विचित्र शोभा पाग की है।

ए क्यों आवे जुगत जुबां मिने, क्यों कहूं एह सलूक।
जो ए तरह आवे रूह दिल में, तो तबहीं होवे टूक टूक।। ४२ ।।

इस पाग की जुगत तथा सलूकी यहां की जबान में कैसे आए? यह शोभा यदि रूह के दिल में आ जाए तो जीव के तभी टुकड़े-टुकड़े हो जाएं।

इन पागै में है दुगदुगी, बनी पागै में कलंगी।
ए जंग करे जोत जोत सों, ए बनायल हक दिल की।। ४३ ।।

दुगदुगी और कलंगी पाग में वैसे ही बनी है, जैसे श्री राजजी ने इनको चाहा। इनकी तरंगें आपस में टकराती हैं।

Nijanand App

कई जिनसें कई जुगतें, कई तरह भांत सलूकी ए।
कई रंग नंग तेज रोसनी, नूर छायो अंबर जिमी जे।।४४।।

इस पाग में कई तरह की जिनसें, कई तरह के जड़ाव तथा कई तरह की सलूकी (शोभा देती) है। जिनसे कई नगों के रंगों की रोशनी आकाश और जमीन पर छाई है।

जित चाहिए ठौर दुगदुगी, सब बनी पाग पर तित।
ठौर कलंगी के कलंगी, सिफत न जुबां पोहोंचत।।४५।।

पाग में जहां दुगदुगी चाहिए वहां दुगदुगी है। जहां कलंगी चाहिए वहां कलंगी है। जिसकी सिफत यहां की जबान से नहीं होती।

कई सुख सलूकी इन पाग में, मैं तो कहूं बिध एक।
दिल चाही रूह देखत, एक खिन में रूप अनेक।।४६।।

मैंने तो पाग की एक शोभा बताई है, जबकि पाग में कई तरह की बनावट की शोभा है। दिल की इच्छानुसार एक क्षण में अनेक रूप दिखाई देते हैं।

ना कछू खोली ना फेर बांधी, इन पागै में कई गुन।
पल पल में सुख दिल चाहे, नए नए देत रूहन।।४७।।

पाग को न खोलना पड़ता है न फिर बांधना पड़ता है। पाग में ही कई गुण हैं जो दिलचाहे सुख रूहों को नए-नए पल-पल देते हैं।

या विध के सुख देत हैं, वस्तर या भूखन।
सुख हक सरूप सिनगार के, किन विध कहूं मुख इन।।४८।।

श्री राजजी महाराज के वस्त्र और आभूषण तथा सभी सिनगार इस तरह के सुख देते हैं, जिनका यहां के मुख से कैसे वर्णन करें?

तिलक नासिका नेत्र की, केस लवने कांन गाल।
मुख चौक देख नैन रूह के, रोम रोम छेदे ज्यों भाल।।४९।।

श्री राजजी महाराज का तिलक, नेत्र, नासिका, बाल, गाल, कान तथा पूरा मुखारबिन्द रूह के नैनों से देखने से रोम-रोम में तड़प पैदा होती है।

मुख सुन्दरता क्यों कहूं, नूरजमाल सूरत।
ए बयान दुनीमें क्यों करूं, ए जो आई अर्स न्यामत।।५०।।

श्री राजजी महाराज के मुख की तथा स्वरूप की सुन्दरता कैसे कहूं? यह अखण्ड परमधाम की न्यामत आई है, इसलिए इसका वर्णन मैं दुनियां में कैसे करूं?

ए मुख देख सुख पाइए, उपजत है अति प्यार।
देख देख जो देखिए, तो रूह पावे करार।।५१।।

श्री राजजी महाराज के मुखारबिंद को देखकर बहुत प्यार और सुख मिलता है। देख-देखकर फिर देखें तो रूह को बड़ा आराम मिलता है।

Nijanand App

जो देखूं मुख सलूकी, तो चुभ रहे रूह माहें।
ए सुख मुख अर्सका, केहे ना सके जुबांए।।५२ ।।

मुख की सलूकी को जो देखूं तो रूह में चुभ जाती है। तो फिर परमधाम के श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द के सुख को यहां की जबान नहीं कह सकती है।

गौर निलवट रंग उज्जल, जाऊं बल बल मुखारबिंद।
ए रस रंग छबि देखिए, काढ़त विरहा निकन्द।।५३ ।।

श्री राजजी महाराज के माथे का रंग उज्ज्वल है। ऐसे मुखारबिन्द की छवि देखकर मैं बलिहारी जाती हूं। श्री राजजी महाराज की यह मस्ती भरी छवि देखने से जुदाई समाप्त हो जाती है।

जो मुख सोभा देखिए, तो उपजत रूह आराम।
आठों पोहोर आसिक, एही मांगत है ताम।।५४ ।।

श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द की शोभा को देखें तो रूह को बड़ा आराम मिलता है। आशिक रूहों का आठों पहर ऐसी शोभा को देखना ही उनकी खुराक है।

जो गौर रंग देखिए, जुबां कहा कहे हक मान।
और कछू न देवे देखाई, आगूं अर्स सुभान।।५५ ।।

श्री राजजी महाराज के गोरे रंग को देखें तो उनके गोरेपन को यहां की जबान से कैसे कहें। श्री राजजी महाराज के गोरेपन के आगे और कुछ दिखाई नहीं देता।

हंसत सोभित मुख हरवटी, अति सुन्दर सुखदाए।
हाए हाए रूह नजर यासों बांधके, क्यों टूक टूक होए न जाए।।५६ ।।

श्री राजजी महाराज के मुख की हरवटी हंसती हुई अति सुन्दर सुख देती है। हाय! हाय! मेरी नजर ऐसी शोभा को देखकर टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं हो गई?

अति गौर सुन्दर हरवटी, और अतंत सोभा सलूक।
बड़ा अचरज ए देखिया, जीवरा सुनत न होए टूक टूक।।५७ ।।

हरवटी की सलूकी गोरी और सुन्दर है। यह बड़े अचम्भे की बात है कि जीव यह सुनकर टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं हो जाता?

हरवटी अधुर बीच लांक जो, मुख अधुर दोऊ लाल।
ए लाली मुख देखे पीछे, हाए हाए लगत न हैड़े भाल।।५८ ।।

होंठ और हरवटी के बीच की गहराई तथा मुख और होंठों की लालिमा देखने के बाद हाय! हाय! दिल में भाले क्यों नहीं लगते?

सोभित हंसत हरवटी, बड़ी अचरज सलूकी मुख।
रूह देखे अन्तर आंखां खोलके, तो उपजे अर्स सुख।।५९ ।।

हरवटी के हंसने से मुखारबिन्द की सलूकी (की शोभा) बड़े आश्चर्य वाली हो जाती है। जब रूह अन्दर की नजर से देखे तो उसे अखण्ड परमधाम के सुख मिलते हैं।

Nijanand App

क्यों कहूं गौर गालन की, सोभित अति सुन्दर।
जो देखूं नैना भरके, तो सुख उपजे रूह अन्दर।। ६० ।।

गालों का गोरापन और सुन्दरता कैसे कहूं? जो रूह नैन भरकर देखे तो उसके हृदय में अपार सुख हो।

क्यों कहूं गाल की सलूकी, क्यों कहूं गाल का रंग।
अनेक गुन गालन में, ज्यों जोत किरन रंग तरंग।। ६१ ।।

गाल की बनावट, गाल के रंग की सलूकी कैसे कहूं? गालों में अनेक गुण हैं जैसे किरणों के रंगों में अनेक तरंगें होती हैं।

बारीक सुख सरूप के, कोई जाने रूह मोमिन।
इस्क इलम जोस याही को, जाके होसी अर्स में तन।। ६२ ।।

परमधाम के श्री राजजी महाराज के स्वरूप के सुख बड़े खास हैं, बारीकी के हैं। इन्हें कोई रूह मोमिन ही जान पाता है, जिनके परमधाम में तन हैं और जिनको इश्क, इलम और जोश मिल गया है।

ए मुख अचरज अदभुत, गुन केते कहूं गालन।
ए रूहें जाने सुख बारीक, हर गुन अनेक रोसन।। ६३ ।।

श्री राजजी महाराज का मुखारबिन्द बड़ी विचित्र शोभा वाला है। इनके गालों के गुण कैसे कहूं? हर एक गुण में अनेक तरह की तरंगें हैं। इन खास बातों को रूहें ही जानती हैं।

रूह के नैना खोल के, देखूं दोऊ गाल।
आसिक को मासूक का, कोई भेद गया रंग लाल।। ६४ ।।

रूह की नजर खोलकर श्री राजजी महाराज के दोनों गालों को देखती हूं तो (आशिक रूहों को) माशूक श्री राजजी के गाल का लाल रंग चुभ जाता है (खा जाता है), गजब ढहा जाता है।

गाल रंग अति उज्जल, गेहेरा अति कसूंबाए।
मेहेबूब मुख देखे पीछे, रूह खिन न सहे अंतराए।। ६५ ।।

श्री राजजी महाराज के गालों का रंग उज्ज्वल और लाल है। उनके मुखारबिन्द को देखने के बाद रूहें एक क्षण की जुदाई सहन नहीं करतीं।

ए अंग अर्स सरूप के, क्यों होए बरनन जिमी इन।
ए अचरज अदभुत हकें किया, वास्ते अरवा अर्स के तन।। ६६ ।।

श्री राजजी महाराज के परमधाम के स्वरूप का यह वर्णन संसार में कैसे करें? यह तो परमधाम की रूहों के वास्ते ही श्री राजजी महाराज ने बड़ा अद्‌भुत आश्चर्य करा दिया जो मेरे तन से सिनगार का वर्णन करा दिया है।

महामत हुकमें केहेत हैं, हक बरनन किया नेक।
और भी कहूं हक हुकमें, अब होसी सब विवेक।। ६७ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैंने श्री राजजी के हुकम से यह थोड़ा सा वर्णन किया है, और भी आगे हक के हुकम से वर्णन करती हूं।

॥ प्रकरण ॥ १२ ॥ चौपाई ॥ ७०८ ॥

Nijanand App